BA Part - II

History Notes

By - Dr. Durga Bhawani

BA Part II History (Hons) IV Paper.

Page No.:
Date : / /

Q. ~~द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण एवं परिणाम~~ का वर्णन करें।

Ans:→ प्रथम विश्व युद्ध की विभीषिका ने विश्व के राजनेताओं को इस बात के लिए मजबूर कर दिया कि वे कोई ऐसा उपाय ढूंढे कि जिससे विश्व में शांति की स्थापना हो। अतः इसी के परिणाम-स्वरूप पेरिस शांति सम्मेलन राष्ट्रसंघ की स्थापना की गई कि ~~सके~~ और ऐसी आशा की गई कि राष्ट्रसंघ दुबारा विश्व युद्ध होने से रोकेगा तथा राष्ट्रसंघ पर नि:शस्त्रीकरण का भी दायित्व सौंपा गया। राजनेताओं ने सोचा ना रहेगा बाँस ना बजेगी बाँसुरी। लेकिन हुआ ठीक इसके विपरीत। वास्तविकता तो यह थी कि प्रथम विश्व युद्ध की अग्नि को तो बुझा दिया गया लेकिन चिंगारी राख के नीचे दबी रह गयी, जिसने धीरे-धीरे सुलग कर प्रचंड अग्नि का रूप ले लिया और द्वितीय विश्व युद्ध का भी गणेश हुआ। सच तो यह है कि द्वितीय विश्व युद्ध का बीजारोपण पेरिस शांति सम्मेलन में ही हो गया था, क्योंकि यहाँ बड़े-बड़े राष्ट्रों के स्वार्थों की पूर्ति हुई और छोटे राज्यों की उपेक्षा की गई।

जिस भयंकरता के

Page No.
Date / /

साथ प्रथम विश्व युद्ध उपस्थित हुआ पुनः उसी भयंकरता के साथ द्वितीय विश्व युद्ध का भी आगमन हुआ। प्रथम विश्व युद्ध के बाद लोग यही सोंचते थे कि दुबारा विश्व में ऐसा घृणित कृत्य कभी नहीं होगा। परन्तु बहुत अल्प काल में ही दानवता का नंगा नाच शुरू हो गया।

द्वितिय विश्व युद्ध के निम्न-लिखित प्रमुख कारण थे!—

(1) **राष्ट्र संघ की असफलता**— राष्ट्र संघ की स्थापना अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुव्यवस्था के लिए हुई थी, जिसे पूरा करने में राष्ट्रसंघ पूर्णतः असफल रहा। छोटे-छोटे राष्ट्रों के झगड़ों को सुलझाने में तो इसे सफलता मिली लेकिन बड़े राष्ट्रों के मामले में यह पूर्णतः असफल रहा। मंचूरिया और अबीसिनिया के मामले में तो यह कोई प्रभावकारी कदम नहीं उठा सका। इसके सदस्य, राष्ट्रों के नीहित स्वार्थ, इसकी असफलता के प्रमुख कारण थे।

(2) **यूरोपीय गुटबंदियाँ**— द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व यूरोप दो गुटों में विभाजित हुआ। जिसके एक गुट

Page No.:
Date : / /

का नेता जर्मनी था और दूसरे का फ्रांस जर्मनी की बढ़ती ~~शक्ति~~ शक्ति देख कर यूरोप के अन्य राज्य आतंकित हो गए और आत्म रक्षा के लिए गुटों का निर्माण करने लगे। फ्रांस ने इस ओर से सर्वप्रथम कदम उठाया उसने जर्मनी के चारों ओर छोटे छोटे राज्यों का एक गुट बनाया और इसके विरुद्ध जर्मनी और इटली ने मिलकर एक दूसरा गुट बनाया। इन दोनों गुटों के मूल में दो बातें थी वैचारिक समानता और हितों की रक्षा। इटली जापान और जर्मनी फासीवाद में विश्वास करते थे। ये वर्साय व्यवस्था का उल्लंघन कर अपनी शक्ति का विस्तार चाहते थे। इसके विपरीत फ्रांस, ~~बेल्जियम~~ चेकोस्लोवाकिया और पोलैंड को वर्साय की संधि से काफी लाभ हुआ था और वे यथा-स्थिती बनाए रखना चाहते थे क्योंकि इसमें उनका हित था। परिस्थितिवश इंगलैंड और रूस को भी युद्ध में शामिल होना पड़ा। इस प्रकार युद्ध के आते आते यूरोप दो परस्पर विरोधी गुटों में विभक्त हो गया।

फलस्वरूप यूरोप का वातावरण दूषित होने लगा जिसका परिणाम था — द्वितीय विश्व युद्ध।

Page No.
Date : / /

(3) साम्राज्यवाद – युद्ध का प्रमुख कारण साम्राज्यवादी प्रवृति थी। प्रथम विश्व युद्ध ने साम्राज्यवाद को एक जबरदस्त धक्का दिया था लेकिन इससे साम्राज्यवाद का समापन नहीं हुआ था। युद्ध के बाद भी साम्राज्यवादी प्रवृतियाँ जारी ही रही। अब यूरोप में इंगलैंड, अमेरिका और फ्रांस के पास विशाल साम्राज्य थे और वे उपनिवेशों का शोषण कर धनी और सम्पन्न बने हुए थे। यूरोप में जर्मनी और इटली तथा एशिया में जापान इस स्थिति में पहुंचना चाहते थे। उपनिवेशों के अभाव में वे हीनता का अनुभव कर रहे थे। अतः अपनी हीन भावना दूर करने के लिए एवं तैयार माल के लिए बाजार और विशाल कार-खानों कच्चे माल प्राप्त करने के लिए वे भी साम्राज्यवाद की स्थापना करना चाहते थे। इस प्रवृति ने द्वितीय विश्व युद्ध की अग्नि प्रज-वलित करने के लिए कुछ शेष नहीं रहा।

(4) हथियारबंदी की होड़ – हथियारबंदी प्रथम विश्व युद्ध का एक प्रमुख कारण था। प्रथम विश्व युद्ध

के बाद ऐसी आशा की जाती थी कि राष्ट्रों के बीच अब हथियारबंदी नहीं होगी क्योंकि सभी इसका परिणाम भुगत चुके थे। 1922 ई० में ~~निःशस्त्री करण~~ वाशिंगटन सम्मेलन निःशस्त्रीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। 1932 ई० के राष्ट्रसंघ के तत्वाधान में विश्व के सभी राष्ट्रों का निःशस्त्रीकरण सम्मेलन हुआ लेकिन सफल नहीं हुआ। इसके अलावा हर दिशा में राष्ट्रसंघ ने और प्रयास किया लेकिन राष्ट्रों के स्वार्थों के आगे उसकी एक ना चली और निःशस्त्रीकरण की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा सका। राष्ट्रों के बीच हथियारबंदी की होड़ पुनः बड़े पैमाने पर शुरु हो गयी।

1935 ई० में जब संसार की हालत काफी बिगड़ गई तो इंगलैंड ने भी हथियारबंदी शुरु कर दी। इंग्लैंड की देखा-देखी वे देश भी हथियारबंदी करने लगे, जो अब तक चुप बैठे थे। फ्रांस और जर्मनी राष्ट्रीय ~~[illegible]~~ बजट का अधिकांश सेना पर खर्च कर रहे थे। इस प्रकार संसार में एक बार फिर युद्ध के ऐसे वातावरण का सृजन हुआ जिससे प्रथम विश्व युद्ध छिड़ा था। यदि ऐसी स्थिति

में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ भी गया तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

(5) 1937 ई० का चीन-जापान युद्ध - यह युद्ध भी द्वितीय विश्व युद्ध के लिए काफी उत्तरदायी था। अब जर्मनी इटली और जापान के बीच साम्यवाद विरोधी समझौता हुआ जिससे जापान का उत्साह काफी बढ़ गया और साम्यवाद के विरोध की आड़ में उसने चीन पर आक्रमण करने की योजना बनायी। जुलाई 1937 ई० में जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया और उसके कई प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। दिसम्बर में चीन की राजधानी नानकिंग पर भी जापान का अधिकार हो गया। इस चीन-जापान युद्ध से भी चुरी शक्तियों को काफी बल मिला।

अतः 21 मई 1939 ई० को जर्मनी ने मेमल पर अधिकार कर लिया। इसके बाद हिटलर ने डानजिंग बन्दरगाह और पोलिस गलियारे को पुनः प्राप्त करने की पोलैंड से माँग की। वर्साय की संधि के द्वारा पोलैंड की स्थापना हुई थी। समुद्र से सम्पर्क स्थापित करने के लिए पोलैंड में जर्मनी के बीचोंबीच एक गलियारा दिया गया, जिससे पोलैंड के निवासी —

डानजिंग बन्दरगाह तक पहुँच सकते थे। हिटलर डानजिंग और पोलिश गलियारे के प्रदेश को जर्मनी का भू-भाग समझता था। वर्साय की संधि ने इसे पोलैंड को देकर उसके साथ अन्याय किया गया था। शांतिपूर्ण तरीकों से भी इस समस्या का समाधान हो सकता था। लेकिन हिटलर ऐसे तरीकों में विश्वास नहीं करता था। हिटलर पोलैंड के प्रति बल प्रयोग की बात कर चुका था।

1 सितम्बर 1939 ई० को जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया और विश्व युद्ध आरंभ हो गया।

— x —